— द्वितीय अध्याय —

"अश्क जी का कृतित्व"

"अश्क" जी का कृतित्व

"अश्क" जी ने समाज के मध्यमवर्ग तथा निम्न मध्य वर्ग का सूक्ष्म निरीक्षण एवं यथार्त जीवनानुभव लेकर हिन्दी उपन्यास में पदार्पण किया। अश्क जी में निम्न मध्य वर्ग की जीवन-रीति, विचार एवं विभिन्न प्रकार की कुण्ठाओं और अनेक प्रभावों को परखने की अपूर्व क्षमता हैं। आधुनिक लेखकों के समान अश्क जी में भी आत्मश्लाघा तथा अहंकार की कमी नहीं। फिर भी अपने उपन्यासों को तथा अपने को बहुत कुछ तटस्थ रख सके हैं।

उनकी उडान केवल उपन्यास तक ही सीमित नहीं बल्कि कहानी, नाटक, एकांकी, काव्य, संस्मरण आदि क्षेत्र में भी अपनी सिध्द हस्तता (अष्टपैलुत्वता) का परिचय दिया हैं।

गिरती दीवारें से आरंभ होकर शहर में घूमता आईना" "एक नन्हीं कीन्दील" बाँधो न नाव इस ठाँव (दो भाग) तक निरंतर बिना रुके नायक चेतन दौडता ही चला रहा हैं। शायद आगे भी चला चले। हमें ऐसा प्रतित होता है कि नायक चेतन नहीं बल्कि खुद अश्क जी ही नायक चेतन को माध्यम बनाकर अपनी बीती गाथा ही सुना रहे हैं। कुछ हदतक उन्हें सफलता भी मिली हैं।

"अश्क" ने ठीक ही कहां है - "मैं सदा इस बात की कोशिस करता हूँ कि अनुभूतियों की सच्चाई और खरेपन तथा कला और शिल्प की सौष्ठवता के साथ अपने वर्ग और समाज का चित्रण करूँ समाज के हित और कल्याण के लिए मेरी कृति आज से सौ वर्ष बाद जिन्दा रहेगी या नहीं इसकी चिंता मैं नहीं करता।" [१]

"अश्क" जी का कथन है - "बिना जिंदगी के यथार्त को जाने बिना अपनी धरती और अपने परिवेश को पहचाने, उन शिखरों पर पहुँचना कठिन है, तो हमने जिंदगी की उन घाटियों को जहाँ रहते थे, देखा, नापा और उनका चित्रण किया।"[२]

---

१ "उपेन्द्रनाथ अश्क : ज्यादा अपनी कम परायी -- पृष्ठ ९५।

२ "अश्क - हिन्दी कहानी - एक अंतरंग परिचय -- पृष्ठ ३५१।

अश्क जी ने साहित्य-सृजन को अपना एकांगी धर्म माना हैं और इसके प्रति वे एकनिष्ठ भाव से इमानदार रहे हैं। मन व आत्मा की महानता ही व्यक्तित्व की विशालता हैं। इस माने में वे एक उदाहरण हैं।

अश्क जी के साहित्य सृजन के पीछे व्यक्ति और समाज का यथार्त चित्रण जन कल्याण की भावना, स्वयं के सुख दुख को पाठकों से बाँटने की प्रेरणा ही साहित्य सर्जना का उद्देश्य हैं। अश्क जी कृति को श्रम साधना से सक्षम बनाने के पक्षपाती हैं। और ऐसा करते भी हैं। "अपनी कृतियों को बार-बार काटना छाँटना, संशोधित परिवर्धित करते रहना अश्क जी की लेखन प्रक्रिया का एक अभिन्न पहलू हैं। इसी कारण उन्हें एक आलोचक ने व्यंग्य से "संशोधनवादी" की संज्ञा दी है और मैं समझता हूँ कि साहित्यिक सफलता में उनके इस संशोधनवाद का बहुत बडा हाथ हैं।" [१]

अश्क जी को समय समयपर केन्द्र तथा राज्य सरकारों ने पुरस्कृत कर सम्मानित किया हैं। उनकी लगभग एक दर्जन पुस्तके पुरस्कृत हो चुकी हैं जिन में "साहब को जुकाम है", "परवाहे", "शहर में घूमता आईना", "हिन्दी कहानी और प्रेमचन्द", "सडको पे ढले साये", "सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ", "कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल", "पत्थर-अलपत्थर", "शिकायतें और शिकायते", "बडी-बडी आँखे" उल्लेखनीय हैं। सन १९६१ में "संगीत नाटक अकादमी" के सम्मे अश्क जी पुरस्कृत हुए। १९७२ में "नेहरू पुरस्कार" से उन्हें सम्मानित किया गया और स्स जाने का निमनान मिला।

अश्क जी १९५२ "प्रगतिशिल लेखक संघ" के प्रयाग अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बने। १९५६ मे "कालिदास जयंती समारोह" में भाग लेने स्स चले गये। भारत सरकार के आमंत्रन पर अश्क जी १९५८ में आंध्रप्रदेश गये। इस प्रकार अश्क एक सफल साहित्यकार हैं। वे साहित्य क्षेत्र में काफी सहिष्णु हैं। उनकी सबसे बडी विशेषता यह है कि, किसी भी कृति का मुल्यांकन करते समय बिना पक्ष पात के सही निर्णय देते हैं। सहिष्णुता और असहिष्णुता के बीच उनका व्यक्तित्व घोर ईमानदार पाठक का भी हैं।

---

१ "उदयन वर्मा - (सं-कौशल्या अश्क) अश्क एक संगीन व्यक्तित्व"- पृष्ठ १३७।

"अश्क" जी के उपन्यासों का संक्षेप्त में परिचय "सितारों के खेल" (१९४०) —

उपन्यासकार "अश्क" जी का "सितारों के खेल" यह पहला उपन्यास हैं। यह लगभग २३६ पृष्ठों का यथार्थवादी शैली में लिखा रोमांटिक उपन्यास हैं। यह पहला उपन्यास होते हुए भी पहले प्रयत्नों के दोषों से सर्वथा मुक्त हैं। रोमांटिक कहानी की तरह आरंभ से अंत तक पाठक को बांध लेने में सफल हुआ हैं।

"सितारों के खेल" उपन्यास का आरंभ कालेज में वाद-विवाद प्रतियोगिता से होता हैं। वाद-विवाद का विषय "वैवाहिक-पध्दति पर पूर्वीय और पाश्चात्य दृष्टिकोण" हैं। लता और जगत भारतीय संस्कृति के अनुसार नैतिकता की नींव पर स्थापित पुरातन वैवाहिक आदर्शों का समर्थन करते हैं। लता के विचारों का जगत जोरदार समर्थन करता हैं। मगर बंसीलाल तो लता और जगत के विपक्ष में अपने विचार व्यक्त करता हैं। जगत पर व्यंग्य कसता हैं। जिससे लता नाराज होती हैं। लता इसके बाद जगत के झूठे आडम्बर पद रीझ जाती हैं। अपने को झूठे प्रेम में खो देती हैं। लता के पिता जब उसका ब्याह जगत से करना चाहते हैं तो जगत अपने असली दात दिखाता हैं।

इधर बंसीलाल रात के समय नल की पाईप की सहारे चोरों की भांति, तीन मंजिले मकान पर चढकर आता हैं। लता के सामने प्रेम याचना करता हैं। लता का अस्वीकार सुनकर उपर से छलांग लगाकर अंग-भंग कर देता हैं। लता को जब बंसीलाल के सच्चे प्रेम का पता चलता है तब बहुत देर होती हैं। लता उसे डॉक्टर अमृतराय के साथ हरिद्वार ले जाया जाना, अंत में असफलता के कारण बंसीलाल को लता द्वार जहर दिया लता डॉक्टर अमृतराय के प्रेम में पड जाती है मगर बंसीलाल की बहन राजरानी के कारण उस प्रेम को त्याग देती है और संसार से चली जाती हैं।

उपन्यास का उद्देश्य स्वतंत्र प्रेम की अपेक्षा वैवाहिक प्रेम और भारतीय नारी की महानता का चित्रण हैं जिसमें "अश्क" को पूर्ण रूप में सफलता मिली हैं।

"गिरती दीवारें" (१९४४) --

"गिरती दीवारे" शरबत का गिलास नहीं कि आप उसे एक ही घूंट में कण्ठ के नीचे उतार लें। काफी के तल्ख प्याले की तरह आप को उसे घ घूंट-घूंट पीना होगा। पर काफी की तल्ख-शीरीनी (कटु-मिठास) का जो राख्स आदी हो जाता है, वह फिर शरबत की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता।" [१]

"गिरती दीवारे" यह उपन्यास नायक चेतन के यौवन-काल का जीवन चित्रित किया गया हैं। साथ ही उसके जन्म से लेकर किशोरावस्था तक सभी अवस्थाओं का चित्रण हुआ हैं। नायक के चरित्र-चित्रण की दृष्टि से उसके आरंभिक काल का चित्रण अपने में महत्वपूर्ण हैं। इस उपन्यास से नायक चेतन कड़ी के उपन्यास का आरंभ होता हैं। यह यथार्थ वादी परंपरा का उपन्यास हैं। उपेन्द्रनाथ "अश्क" जी ने नायक चेतन को माध्यम बनाकर खुद का ही चरित्र-चित्रण इस उपन्यास से आरंभ किया हैं। अपना और अपने पूरे परिवार क चित्रण हुआ हैं। इसके साथ ही इर्द-गिर्द का उच्च मध्य वर्गीय समाज का चित्रण भी यहाँ विशेष महत्व रखता हैं। समाज और समाज में घटीत घटनाएँ यहाँ महत्वपूर्ण अस्थान रखती है। उसका मोहल्ला, जात-पात, भेद-भाव, अशिक्षा, अनाचार, गरिबी, भूख, शोषण आदि अनेक बातों का महत्वपूर्ण विश्लेषण "गिरती दीवारे" में हुआ हैं। काम और कामकाजन्य कुण्ठा का भी बहुलता से चित्रण होता दिखाई देता हैं। चेतन और कुन्ती का असफल प्रेम, बाद नीला से प्रेम मगर शादी चन्दा से। नीला का अनमेल विवाह आदि बातें विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। नीला का अनमेल विवाह पाठक तक दु:खी करता हैं। चेतन भी इसी प्रसंग से प्रेरित करके भावनापूर्ण चित्रण द्वारा निम्न मध्य वर्ग की सिसकियां सुनकर सामाजिक आर्थिक विषमता से युक्त दीवारों को गिराने में प्रयत्न-शील होता हैं।

"शहर में घूमता आईना" (१९६३) —

"शहर में घूमता आईना" यह उपन्यास "गिरती दीवारे" की अगली कडी हैं। इस उपन्यास का नायक चेतन ही हैं। अपनी प्रेमिका तथा साली नीला का ब्याह रंगून के एक अधेड विधुर मिलिट्री एकाउंटेण्ट से होने के कारण चेतन दु:खी हो जाता है; और इसका जिम्मेदार अपने-आप को ही समझता हैं।

"शहर में घूमता आईना" उपन्यास तीन परिच्छेदों में विभक्त हैं; सुबह, दोपहर और शाम। सुबह जब चेतन नींद से जगता है तो वह बेहद दु:खी हैं। अपनी पत्नी चन्दा के नैकट्य से बचने तथा साली नीला के गम को भुलाने के लिए वह सुबह ही घर से बाहर निकलता हैं। मित्र अनंत को जगाकर उसके साथ बाहर होता हैं। अमीचन्द के डिप्टी कलेक्टर बनने की बात उसको समझ जाती हैं। वहाँ से बद्दा तथा उसकी माँ की कथा, बाद रामदित्ता हलवाई की रोचकता पूर्ण तथा मन को व्यथीत करनेवाली कहानी। उसके बाद मित्र दीनानाथ का जडिये से आनरेरी हकिम बनकर लोगों को ठकाने तथा साल को एक बच्चा पैदा करने की कहानी। चाचा घूनीराम तथा उसके बेटे फत्तुराम और शहर को दूसरें पागलों की कथा। कवि "हुनर" मित्र निश्तर और साले रणधीर से भेंट। दोपहर में खालसा होटल में देबू, जगना, बिल्ला से और उनकी गुण्डाई की कहानी। पिता के चार प्रकार के मित्र। महात्मा बांशीराम और ढोंगी जालंधरी मल "योगी" से भेंट। लाल बादशाह की कहानी। सहपाठी अमरनाथ से भेंट। बादशाह के परिच्छेद का आरंभ-अमीरचन्द द्वारा भागों और भागवंती की पीटाई और उसका पूरा तमाशा। बाद पिता के जोश पूर्ण आव्हान आदि-आदि।

एक प्रकार से शहर में घूमता आईना" सैरबीन सा आभास देता हैं। कथा वस्तू का आपस में मेल नहीं हैं। जालंधर शहर तथा कल्लोवानी मुहल्ला और वहाँ के निम्न मध्य वर्ग का चित्रण हैं। ये कुण्ठा, निराशा, घटन तथा वैषम्य के उस वातावरण में अपने को मिश्रित पाते है जहाँ दम घुट रहा हैं और वे निस्द्देश्य भटकते हुए दिखाई पडते हैं। वे हीनता और कामांधता से ग्रसित हैं। इन वास्तविक दृश्यों को असामान्य मनोदशाओं ने उपन्यास अवांछित विस्तार दे दिया हैं। उसका नायक चेतन उपन्यासकार के इशारों पर नाचती हुई कठपुतली बन गया हैं।

"बड़ी - बड़ी आँखें" (१९५५) --

"बड़ी-बड़ी आँखें", "अश्क" जी का चौथा उपन्यास हैं। इस उपन्यास का वातावरण उपन्यासकार की अन्य औपन्यासिक कृतियों से कुछ विपरीत सा ही हैं। इस उपन्यास का नायक संगीत सिंह हैं। जो आपनी प्रिय पत्नी की मृत्यु के कारण अशांत है और शांति पाने के लिए देवनगर आया। यहां वह उद्देश्य की उच्चता, वातावरण की स्वच्छता, कलाकारिता और समाज सेवा की लगन के साथ देवसेना की बढ़ती हुई सरगमीयों में ही अपने को लगा लेता किन्तु यहाँ तो उसे विपरीत अवस्था से गुजरना पड़ा। मन को कचोटती हुई अशान्ति ही प्राप्त हुई। भाग्य की विडम्बना। शान्ति के खोज में अन्ततः अशान्ति की उपलब्धि। उपन्यास का घटना क्रम नायक संगीत की आत्मकथा में घुल-मिलकर तथा आवेश के साथ उसकी स्मृतियों पूर्ण कथा के माध्यम से पूरा उभरा हैं।

देवाजी देवनगर के संस्थापक, "देववाणी" पत्रिका के सम्पादक तथा देवसेना के अधिष्ठाता हैं। उपन्यास के कुछ पृष्ठ पढ जाने पर पाठक देवा जी के व्यक्तित्व से स्वतः ही प्रभावित हो उठता हैं। उनका व्यक्तित्व स्वप्न-द्रष्टा के रूप में प्रकट होता हैं। उनके लेखों भाषणों से यही पता चलता है कि धरती पर यदि स्वर्ग है तो वह "देवनगर" में हैं। कथा के आगे बढ जाने पर यह स्वतः ही स्पष्ट हो जाता हैं कि वस्तुतः देवा जी की "कथनी" और "करनी" में पर्याप्त अन्तर हैं।

देवनगर के संचालक की बेटी वाणी हैं। वाणी बड़े दिन के शाम की सभा में संगीत की पास वाली कुर्सी पर बैठकर अपने पिता, चचेरे भाई एवं तीरथराम को आश्चर्य चकित कर देती हैं। किन्तु तीरथराम के लिए तो यह वज्र-प्रहार ही सिध्द हुआ। दो बच्चों का पिता होते हुए भी उसके मन में वाणी को पाने की लालसा रहती हैं। तीरथराम वाणी और संगीत को हर प्रकार से बदनाम करने की चेष्टा करता हैं।

"बड़ी-बड़ी आँखें" उपन्यास अपने में अद्वितीय हैं। एक अत्यन्त छोटे और सीमित कथा प्रसंग तथा जीवन चित्र में किस प्रकार अनेक आकर्षक, चटुल और सुन्दर रंग भरे जा सकते है, इसकी एक अत्यन्त सुखद और आश्चर्य पूर्ण अनुभूति पाठक

को इस कृति से मिलती हैं।

पत्थर - अलपत्थर (१९५७) —

"पत्थर - अलपत्थर" उपन्यासकार "अश्क" जी का पाँचवाँ लघु उपन्यास यात्रा वर्णन की शैली को लेकर लिखा गया हैं। इसका नायक कश्मीर का घोडे-वान हसनदीन हैं जो निम्न वर्ग से संबंधित हैं। हसनदीन और उसकी अस्तव्यस्तता उसका भोलापन एक प्रकार की छाप छोड जाता हैं। हसनदीन और उसके दीवा-स्वप्न भी दिखायी देते हैं। कश्मीर के सौन्दर्य वर्णन के साथ-साथ नायक हसनदीन की त्रासदी को प्रमुख स्थान उपन्यास के आरंभ से अंत तक नायके को अपने दिवा स्वप्नों, अभिलाषाओं, विश्वासों एवं आस्थाओं में ही घिरा हुआ पाते हैं।

अपने को अमीर कहलाने वाले कंजूस सफेद-पोश खन्ना साहब का ओछापन भी बडे ही आकर्षक ढंग से प्रकट किया हैं। फलतः खन्ना पाठकों के लिए घृणा का पात्र बन जाता हैं। "अश्क" जी यहाँ अपने को अमीर समझने वाले मगर फिर भी कम-से कम व्यय में ज्यादा से ज्यादा आनंद पाने की कोशिश करने वालों के कमीने पन का पर्दाफाश किया हैं। इसके साथ ही हसनदीन की अस्तव्यस्तता और उसके भोले पन का फायदा उठाने वाले अफसर सरदार हरनामसिंह और क्रीमखाँ और रैना आदि के प्रति भी अपना रोष प्रकट किया हैं। हसनदीन से सत्रह रुपये लेकर आठ रुपये उन्होंने अपर के अफसरों को भेंट दिए तथा शेष आपस में बाँट लिये। मगर फिर भी हसनदीन की बीबी को और पचास रुपयें पैदा करने के लिए कहते हैं।

व्यंग्य एवं हास्य उपन्यासकार की शैली की विशेषताएँ रही हैं, जिनका परिचय पाठकों को इस उपन्यास में सहज ही मिल जाता है। व्यंग्य इतना घहरा हो गया हैं। कि वह उपन्यास की पृष्ठ भूमि में पूर्ण रूप से लक्षित हुआ हैं।

गर्म राख (१९५२) —

"गर्म राख" यह उपन्यास "अश्क" जी का तीसरा बृहद उपन्यास और निम्न मध्य वर्गीय जीवन पर लिखा दुसरा उपन्यास हैं। "गिरती दीवारें" उपनयास

का नायक चेतन है, तो "गर्म राख" का नायक भी निम्न मध्य वर्ग से संबंधीत ही है। इस उपन्यास का नायक जगमोहन है। नायक जगमोहन से सत्याजी प्रेम करती है, तो जगमोहन दुरो से प्यार करता है। मगर दुरो हरीश से प्यार करती है। न जाने हरीश भी शायद और किसी से प्रेम करता हो! इसके अतिरिक्त अनेक छोटे-छोटे कथाचक्र भी संजोये गये हैं जिनकी अपनी ही विशेषताएँ हैं। जैसे, गोपालदास पण्डित धर्मदेव वेदालंकार शुक्ला जी, भगतराम सहगल तथा उनकी पत्नि शान्ता जी, कवि घातक और उनकी पत्नी आदि। वस्तुत: उपन्यासकार ने नायक विशेष के चरित्र-चित्रण पर उतना जोर नहीं दिया जितना कि वह इन मुख्य कथा-चक्रों के माध्यम से बुध्दि जीवी निम्न मध्य वर्ग की विडम्बना को ही साकार रूप से प्रकट करना चाहता है। इसके साथ ही बुंध्दि जीवी वर्ग के जीवन-संघर्ष की कहानी को भी विविध रूपों में अंकित किया गया है। जीवन यापन करने तथा समाज में आदर पाने हेतु इस वर्ग को किस प्रकार की परिस्थितियों से गुजरना पडता है और किस-किस प्रकार के कार्य करने पडते है, यह घातेक जी, पण्डित धर्मदेव वेदालंकार, शुक्ला जी आदि के उदाहरण से पाठकं को स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है।

उपन्यास "गर्म राख" हिन्दी के अन्य सामान्य उपन्यासों से पर्याप्त भिन्न है। इसमें कथा के द्वारा किसी नायक विशेष का जीवन चरित्र न देकर अनेक वर्णनात्मक चित्रों के माध्यम से बुध्दि जीवी मध्य वर्ग का एक ऐसा चित्रण प्रस्तुत किया गया है जो अपना विशेष अस्तित्व रखता है।

एक रात का नरक (१९ —) —

"एक रात का नरक" इस उपन्यास में लेखक पाठकों को शिमला से दूर पहाडी रियासत सी॰पी॰ वार्षिक मेले तथा वहां के रंग बिरंगे आकर्षण तथा रियासत की हवालात के अंधेरे भूगृह में एक रात की सैर कराकर घर बैठे ही उस रियासत की वास्तविक दशा तथा शासकों के मनमाने अत्याचार का अनुभव करा देता है।

लेखक की बहुत दिन से यह इच्छा थी कि वह एक बार सी॰पी॰ का मेला देखे। शिमला जाने पर उसे मौका भी मिल गया, पार्टी में पण्डित तेजभान भी थे।

उन्होंने ही मेला देखने का प्रस्ताव लेखक के सामने रखा था। लेखक ने कभी पहाडी मेला न देखा था और न ही वहां जाने का सुअवसर उसे मिला था जिससे उस मेले के बारे में जानकारी हो। लेखक ने मेले के बारें में सुना था कि वहां स्त्रियों की प्रदर्शनी होती हैं। वहाँ मेले में ही शादी विवाह के मामले तय हो जाते हैं। आदि अनेक किम्वदन्तियाँ लेखक को मेला देखने के लिए औत्सुक्य उत्पन्न करती हैं, और लेखक को मौका भी प्राप्त हुआ हैं।

लेखक लाला जी और उनके मित्रों के साथ सी॰पी॰ जाता हैं। लाला और उनके मित्र एक जगह बैठकर ताश आदि खेलने में मस्त हो गये। यह अच्छा अवसर समझकर लेखक मेला देखने और पहाडी गीत इकट्ठे करने के हेतु घूमने लगता हैं। संध्या के समय भूख लगने के कारण लाला जी और दूसरे मित्रों को लेखक खोजता हैं मगर उन लोगों का पता न लगने के कारण मिठाई खरीद कर खाने लगता हैं, तब राणा साहब की सवारी मेले की शोभा बढाने के लिए आती हैं। उसी समय लेखक चौकीदार से झगडा होता है और लेखक को उसी कारण नरक में एक रात काटनी पडती हैं। उसके वर्णन तथा वहां के कर्मचारियों के अत्याचार की कहानियाँ पाठक के मन-मीस्तष्क पर सदा के लिए अंकित हो जाती हैं।

एक नन्हीं किन्दील (१९६९) —

उपन्यासकार "अश्क" जी का "एक नन्हीं किन्दील", "गिरती दीवारें" कही में जुडा हुआ तीसरा उपन्यास हैं। सात सौं अस्सी पृष्ठों में तथा छः खण्डों में संजोया गया हैं। "शहर मे घूमता आईना" में जालंधर के निम्न मध्य वर्गीय समाज को चित्रित किया गया है और "एक नन्हीं किन्दील में लहौर मध्य वर्गीय समाज को चित्रित किया गया हैं। उपन्यास का आरंभ नायक चेतन से ही होता हैं। शिमला से कविराज रामदास के शोषण का शिकार होकर जालंधर आता हैं, तो वहां प्रेमिका तथा साली नीला की शादी एकाउंटेण्ट विधुर मिलिट्री मन से हो ने के कारण घर आता है मगर वहां भी शांति न मिलने के कारण लाहौर चला आता हैं। लाहौर में घर की समस्या के साथ नौकरी की समस्या का भी उसे सामना करना पडता हैं।

चेतन को लाहौर में एक नहीं अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है। संपादक विभागवाले उसे अनुरोध कर कविता लिखने को कहते हैं और बाद में पैसे देने पर उनकी नानी मरती हैं। पत्नी के रहते भी लौंडों से प्यार उनके लिए एक साधारण सी बात थी। बलोची जैसे पात्र भी इसकी श्रेणी में आते हैं। ऐसा दम घोटने वाला वातावरण था जिससे चेतन अपने को पूर्णतय: मुक्त करना चाहता था। चौधरी ईश्वरदास, जीवनलाल कपूर, पण्डित टेकाराम तथा आजादलाला जरकी आदि को समाज और राष्ट्र को खोकला बनानेवाले कीडों की उपमा देता हैं। इसके साथ ही चेतन की भाभी की बीमारी तथा कश्मीरी लाल "दाग" का मन कचोट ने वाला विवरण, चन्दा के पिता का पागल होने की बात, और माँ भी सेठ वीरभान सर्राफ के यहां रसोई का काम देखती है उसी सेठ के यहाँ अमीचन्द जमाई होने वाला हैं। चेतन के लिए यह घटना सब से दु:ख दायी हैं।

"एक नन्हीं किन्दील" में उपन्यासकार "अश्क" ने डायरी शैली का उपयोग किया हैं। जो भी सम्पर्क में आता है अथवा जो भी घटना घटती है, उसे वह अपनी नोट-बुक में लिखना नहीं भूलता। भले ही लेखक ने समाज के यथार्थ बिम्ब को छोटी-छोटी घटनाओं के द्वारा ही पाठकों के सम्मुख रखने का ध्येय रखा हो, इस इस अनपेक्षित में निश्चय ही अनर्गलता आजाती हैं।

बाँधो न नाव इस ठाँव (भाग एक) (१९७४) —

"बाँधो न नाव इस ठाव" उपन्यास "गिरती दीवारे" उपन्यास की चौथी कडी हैं। इस उपन्यास को लेखक ने दो भागों में विभक्त किया हैं। लेखक यही इच्छा होगी कि नाव चेतन की कथा का इसी में पूर्ण कर दे, किन्तु वह असफल ही रहा हैं।

उपन्यास के प्रथम भाग में नायक चेतन तकलीफ और तनाव का सामना करता हुआ स्वार्थी समाज मे अपनी जिन्दगी बसर करता है। वह समाज की कुरीतियों को यथार्थ रूप से प्रस्तुत करना ही अपना ध्येय समझता हैं।

जीवनलाल से अनबन हो जाने के कारण चेतन "भूपाल" की नौकरी से त्याग पत्र दे देता हैं। चेतन की नजरों में महाशय जीवनलाला फूहड और कमीना हैं। नौकरी छूट जाने के कारण चेतन की आर्थिक हालात एकदम पतली हो जाती हैं। वहां से आने के बाद कवि रामदास के पास जाता हैं। वही भी निराशा ही हात आती हैं। वह घातक जी के पास जाता हैं। मगर घातक अपनी नयी कविता "सहोदरा" और प्रेमिका निम्मो में डूबा हुआ ही दिखता हैं। जो उसे बहन-बहन कहते हुए अंक में ले भरता हैं। वहां से भाई साहब के पास जाता है पर निराशा ही हात मिलती हैं। घर आकर चारपाई पर लेट जाता है कि तभी अचकन-पोश नीलामकर दो रुपये दे जाता हैं। उन्हीं दो रुपये के विलायती रुमाल खरीद कर अनारकली में बेचने लगता है कि सब-जज होने का खवाब देखता हैं। बाद में धर्मदेव वेदालंकार तथा "पण्डित रत्न" से भेट हो जाती हैं। चेतन को पण्डित रत्न" चुन्नीभाई के यहाँ से उर्दू में अनुवाद का काम दिलवाते हैं। बाद "मस्ताना योगी" के मालिक तथा सम्पादक से चेतन को अनुवाद का काम दिलवाते हैं। बाद में "पण्डित रत्न" चेतन को "लिट्रेरी लीग" जैसी संस्था खोलने की सलाह देते है और सहायता भी करते हैं। जिसमें चेतन को सरपरस्तों को बनाके समय अच्छे-बुरे का अनुभव आ जाते हैं। चेतन लाला हकिमचन्द से मिलकर उन्हें सोसाइटी का सरपरस्त बनने के लिए बाध्य करता हैं। मगर लाला हकिमचन्द सरपरस्त बनने से इन्कार बरते है और कहते, है कि वे पाँच महिने के लिए शिमला जा रहे हैं। हा वे अपने बेटी के लिए एक हिन्दी ट्यूटर अवश्य चाहते थे, जिसे वे अपने साथ ले जाकर चालीस रुपये महीना देना चाहते थे। यह सुनकर चेतन ही ट्यूटर बनकर शिमला जाने को तय्यार हो जाता है और कोशिश करके उसमें सफलता भी पा जाता हैं। भाई साहब चेतन को ट्यूशन लेने से मना करते हैं मगर चेतन नहीं मानता। अंत में सोसायइटी का सभी काम "हुनर" साहब को सौंपकर चेतन शिमला जाने की तय्यारी में जुट जाता हैं। चेतन के सामने अब एक ही सपना होता है कि वह शिमला से ट्युशन समाप्त कर वापस आकर "लॉ" पास करके सब-जज बनने का।

नायक चेतन के चरित्र-चित्रण में ही उपन्यासकार "अश्क" ने तत्कालीन उच्च, मध्य एवं निम्न मध्य वर्ग का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया हैं। उनमें सूफी

हनुमान, जगदीशसिंह आदि ऐसे पात्र हैं जो सोसाइटी के सरपरस्त बनकर लाभ एवं मनोरंजन को प्राप्त करना चाहते हैं। इस प्रकार सोसाइटी के रूपमें चेतन समाज के उच्च और मध्य वर्ग के लोगों का यथार्थ चित्रण उपस्थित करता हैं।

बाँधो न नाव इस ठाँव (भाग दो) (१९७४) --

"अश्क" जी के उपन्यास बाँधो न नाव इस ठाँव" के दूसरे भाग का आरंभ रेल्वे स्टेशन के प्लेट फार्म से होता हैं। चेतन को लाला हकिमचन्द की लडकी चन्दा की ट्यूशन मिलने के कारण वह लाला हकिमचन्द और उनके परिवार के साथ शिमला जा रहा होता हैं। शिमला जाने से पहले चेतन ट्यूशन मिलने के कारण बहुत खुश था मगर वहाँ जाकर और उसे चन्दा को पढाते समय बहुत दुःख सा होता हैं कि वह पढाई में ध्यान नहीं देती और बेमतलब की बहस करती रहती हैं जिसके कारण कभी-कभी चेतन का संयम छूटने का उसे डर सा लगता हैं। चेतन अब अपने-आप-पर चिढता है कि उसने भाई साहब की बात नहीं मान ली। लाला हकिमचन्द और उनके साथी क्लर्कों के गंदे और अश्लील तथा भौंडे मजाक से उसे चीढ सी उत्पन्न होने लगती हैं। चेतन ट्यूशन छोडकर वापस जाने की कोशिश करता रहता हैं। मगर उसमें भी असफल हो जाता हैं। सी•पी• के मेला देखते समय चेतन पर आफत आती है और उसे एक रात भूगृह में गुजारनी पडती है जहां सील, पिस्सुओं, साँप तथा बिछुओं का रात भय के शिवाय कुछ नहीं मिलता। उपर से बीना गलती के सजा तथा अपमान सहना पडता हैं। अंत में चन्द्रा के दादा आने के बाद चेतन चन्द्रा के ट्यूशन छोड के जाने की बात करता है, तो दादा जी हकिमचन्द को कहकर चेतन का अपमान करते है, बाद क्षमा मांगते है लेकिन अस्सी में से साठ रूपये ही देते हैं। चेतन अपने रूपये दो सरपरस्तों से वसूल करता है मगर उसका मन बाद में उसे कोसता है कि उसने अपनी मेहनत के पैसे लाला से ही लेने थे, दूसरों को क्यों ठगा ?

"अश्क जी ने बाँधों न नाव इस ठाव" इस उपन्यास को लिखकर "गिरती दीवारे" की चेतन के कथा को श्रृंखला की चौथी कडी में गूंथने का यत्न किया है

किन्तु वे पूर्ण प्रयत्न सफल नहीं हो सके। चरित्रांकण की भूमिका पर वे असफल ही रहे हैं। उनके आधे से ज्यादा बेमतलब के प्रसंगों ने उपन्यास का चमत्कारिकता को नष्ट कर दिया है और कथानक को बोझिल बना दिया हैं।

इसके बाद "अश्क" जी के और दो उपन्यास हैं। --

संघर्ष का सत्य --

निमिषा (१९८०)

नाटक

१) जय-पराजय (१९३७)
२) स्वर्ग की झलक (१९३८)
३) छठा बेटा (१९४०)
४) कैद (१९४५)
५) उडान (१९४३-४५)
६) पैतरे (१९५२)
७) अलग-अलग रास्ते (१९४४-५३)
८) आदर्श और यथार्थ (१९५४)
९) अंजोदीदी (१९५३-५४)

एकांकी

१) पापी (१९३८)
२) लक्ष्मी का स्वागत (१९३९)
३) जोंक (१९३८)
४) पहेली (१९३९)
५) वेश्या (१९३८)
६) अधिकार का रक्षक (१९३८)
७) चमत्कार (१९४०)

८) बहने (१९४२)
९) मैमूना (१९४२)
१०) चुम्बक (१९४३)
११) भँवर (१९४३)
१२) पक्का गाना (१९४४)
१३) आपस का समझौता (१९३९)
१४) विवाह के दिन (१९४०)
१५) देवताओं की छाया में (१९४०)
१६) खिड़की (१९४०)
१७) सूखी डाली (१९४०)
१८) नया पुराना (१९४०)
१९) कामदा (१९४२)
२०) चिलम (१९४२)
२१) तौलिये (१९४३)
२२) आदिमार्ग (१९४३)
२३) तूफान से पहले (१९४६)
२४) काइसा साहब कहसी आया (१९४६)
२५) अंधी गली मे आठ एकांकी (१९४९)
२६) पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ (१९५०)
२७) बतासिया (१९५०)
२८) कस्बे के क्रिकेट क्लब का उद्घाटन (१९५०)
२९) मस्के बाजों का स्वर्ग (१९५०)
३०) साहब को जुकाम है — १९५४ से १९६० के एकांकी

कहानियाँ

१९३२ से १९३६ के रचनाकाल में "अंकुर", "नासुर", "घट्टान", "टापी" "पिंजरा", "गोखरू", "बैंगन का पौधा", "मेमने", "वालिये", "कालेसाहब", "बच्चे", "उबाल", "कैप्टन रशीद", आदि अश्क जी का प्रतिनिधि कहानियाँ हैं।

काव्यग्रंथ

१) प्रातः प्रदीप (१९३७)
२) उर्मियाँ (१९३८ से १९४१)
३) बरगद की बेटी (१९४९)
४) दीप जलेगा (१९५०)
५) चाँदनी रात और अजगर (१९५२)
६) सड़कों पर ढले साये (१९५३ से १९६०)
७) खोया हुआ प्रभा मंडल (१९६१ से १९६५)
८) एक दृश्य नदी (१९६३)

संस्मरण

१) मंटो मेरा दुश्मन ७१९५६) निबंध.

लेखपत्र, डायरी और विचार ग्रंथ

१) ज्यादा अपनी कम परायी (१९५०)
२) रेखाएँ और चित्र (१९५८)

संपादन

प्रतिनिधी एकांकी (१९५०)
रंग एकांकी (१९५६)
संकेत (१९५६)

अनुवाद --

ऐंटन चे खोव के लघु उपन्यास का अनुवाद "चे आदमी चे चूहे" (१९५०) स्टीन बैक के प्रसिध्द उपन्यास - "आय माइस एण्ड मैन का हिज एक्सेलेन्सी (१९५०), अमर कथाकार दोस्ताव्हस्की के लघु उपन्यास "डर्टी स्टोरी" का हिन्दी अनुवाद।

उपेन्द्रनाथ अश्क की कृतियाँ अपनी अलग ही खासियत के कारण ऊंची कामयाबी को छू गयी हैं। साहित्यिक चुनौती ही इनका जीवन है, ध्येय है। उनका साहित्य ही आदि है, मध्य है, और अंत भी है।

.....